सूरह — एक कहानी

सूरह अल-क़मर

चाँद

पूरा सफ़र — फटा चाँद और आसान क़ुरआन —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 54 • 55 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इक़्तरबतिस्-सा'अतु वन्शक़्क़ल्-क़मर
1. क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद फट गया।

व लक़द यस्सर्नल्-क़ुरआन लिज़्-ज़िक्रि फ़-हल मिम्-मुद्दकिर
17. और बेशक हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान बना दिया, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

तज्री बि-अ'युनिना
14. वो (कश्ती) हमारी आँखों के सामने चल रही थी।

इन्ना कुल्ल शै-इन ख़लक़्नाहु बि-क़दर
49. बेशक हमने हर चीज़ एक अंदाज़े से बनाई है।

व मा अम्रुना इल्ला वाहिदतुन क-लम्हिम्-बिल्-बसर
50. और हमारा हुक्म तो बस एक बात है, आँख के झपकने की तरह।

फ़ी मक़्'अदि सिद्क़िन 'इंद मलीकिम्-मुक़्तदिर
55. सचाई की नशिस्त में, एक बादशाह-ए-मुक़्तदिर के पास।

वो रात जब चाँद फटा

बेटा, ये सूरह एक ऐसे मोजिज़े की ख़बर से खुलती है जिसे मक्का के लोगों ने अपनी आँखों से देखा: '**इक़्तरबतिस्-सा'अतु वन्शक़्क़ल्-क़मर** — **क़ियामत क़रीब** आ गई, और **चाँद फट** गया।'

ये वाक़िआ सहीह अल-बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में कई सहाबा के ज़रिए दर्ज है — अनस, इब्ने मसऊद, इब्ने अब्बास और दूसरे (रज़ि0)। क़ुरैश ने नबी ﷺ से एक निशानी की फ़रमाइश की। और आपने उन्हें चाँद दो टुकड़ों में बटा हुआ दिखाया, यहाँ तक कि हिरा का पहाड़ दोनों हिस्सों के दरमियान नज़र आ रहा था। इब्ने मसऊद ने कहा: **मैंने पहाड़ को चाँद के दो टुकड़ों के दरमियान देखा।**

बेटा, आयत की तरतीब ग़ौर कीजिए: **क़ियामत का ज़िक्र पहले है, फिर फटना।**

क्योंकि मोजिज़ा ख़ुद एक तंबीह था — एक मुज़ाहरा कि **ये क़ायम, ना-बदलने वाला आसमान में ख़लल डाला जा सकता है**, कि वो निज़ाम जिसपर हम भरोसा करते हैं दाइमी नहीं, कि क़ियामत उन लोगों के गुमान से क़रीब है।

और जिन्होंने इसे देखा उनका जवाब क्या था? '**व इंय्-यरौ आयतंय्-युʻरिज़ू व यक़ूलू सिहुम्-मुस्तमिर्र** — और अगर वो कोई निशानी **देखते** हैं, तो **मुँह फेर** लेते हैं और कहते हैं: **गुज़र जाने वाला जादू।**'

बेटा, इस पर ठहरिए। उन्होंने एक मोजिज़े की माँग की। उन्हें वो मिला जिसे कोई इंसान सजा नहीं सकता। और उन्होंने कहा: **जादू — और चल दिए।**

और ये हमें एक अहम बात सिखाता है, बेटा, कि लोग सच को क्यों रद्द करते हैं। **ये अक्सर दलील की कमी नहीं होती।** जो फटे चाँद को 'जादू' कहेगा उसे बहस से कभी क़ायल नहीं किया जा सकता था। '**व कज़्ज़बू वत्तब'ऊ अह्वा-अहुम** — और उन्होंने झुठलाया, और अपनी **ख़्वाहिशात** की पैरवी की।' यही है: **इनकार पहले ख़्वाहिशात से आया, और वज़ाहत बाद में गढ़ी गई।**

'**व कुल्लु अम्रिम्-मुस्तक़िर्र** — और हर मामला **ठहर** जाएगा, अपनी आराम-गाह तक पहुँचेगा।' बेटा, क्या जुमला है। इस दुनिया में हर अन-सुलझा मामला — हर झूट जो कामयाब हुआ, हर सच जिसका मज़ाक़ उड़ाया गया, हर ज़ुल्म जो सज़ा से बचा — **आख़िर-कार वहाँ आराम पाएगा जहाँ वो सच्ची तरह का हक़दार है।**

वो जुमला जो सूरह में बार बार आता है

बेटा, इस सूरह की एक बनावट है जिसे आपको ग़ौर करना चाहिए, क्योंकि ये क़ुरआन के सबसे ख़ूबसूरती से तरतीब-दिए बाबों में से एक है।

अल्लाह **चार तबाह-शुदा क़ौमें** पेश करते हैं, एक के बाद एक — और हर एक के बाद, वो एक सवाल घंटे की तरह बजाते हैं: '**व लक़द यस्सर्नल्-क़ुरआन लिज़्-ज़िक्रि फ़-हल मिम्-मुद्दकिर** — और हमने **यक़ीनन क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान** बना दिया — **तो है कोई जो नसीहत हासिल करे?**'

चार बार, बेटा, ये आयत आती है — नूह की कहानी के बाद, 'आद के बाद, समूद के बाद, और लूत की क़ौम के बाद। और ये इस उम्मत पर अल्लाह के बड़े तोहफ़ों में से एक है।

'**यस्सर्ना**' — **हमने इसे आसान बनाया।** बेटा, सोचिए इसका मतलब क्या है। अल्लाह ने सिर्फ़ एक किताब नहीं भेजी; उन्होंने इसे **आसान** बनाया — पढ़ने में आसान, हिफ़्ज़ करने में आसान, उस दर्जे पर समझने में आसान जितनी एक शख़्स को ज़रूरत हो, दिल में रखने में आसान।

और क्या ये साबित नहीं? **इंसानी तारीख़ में कोई दूसरी किताब नहीं — एक भी नहीं — जिसे लाखों लोगों ने लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़, शुरू से आख़िर तक हिफ़्ज़ किया हो।** सात साल के बच्चे, उन मुल्कों में जहाँ अरबी बोली तक नहीं जाती, पूरा क़ुरआन अपने सीनों में रखते हैं। बेटा, कोई डिक्शनरी या इनसाइक्लोपीडिया हिफ़्ज़ नहीं करता; मगर **क़ुरआन इंसानी याददाश्त से ऐसे चिपक जाता है जैसे कोई और चीज़ नहीं।** यही आयत हमारे सामने पूरी हो रही है।

और सवाल का दूसरा हिस्सा और भी चुभता है: '**फ़-हल मिम्-मुद्दकिर**' — **तो है कोई?** दरवाज़ा खोल दिया गया, बेटा; रास्ता आसान कर दिया गया; क़ीमत हटा दी गई। **अब सिर्फ़ एक चीज़ की कमी है — कोई जो आए।**

चार क़ौमें, चार सबक़

नूह (अलैहि0) से शुरू: 'उन से पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया — उन्होंने हमारे बंदे को झुठलाया और कहा: **मजनून** — और उसे झिड़का गया।' तो उन्होंने अपने रब को पुकारा: '**अन्नी मग़्लूबुन फ़न्तसिर** — मैं मग़लूब हो गया हूँ, तो तू बदला ले।'

और फिर वो मंज़र, बेटा — और उसमें एक जुमला है जो पूरे तूफ़ान से ज़्यादा क़ीमती है: 'तो हमने आसमान के दरवाज़े उंडेलते पानी से खोल दिए, और ज़मीन को चश्मों से फाड़ दिया, और पानी एक ऐसे काम पर मिल गया जो पहले से तय था। और हमने उन्हें **तख़्तों और कीलों वाली** (कश्ती) पर उठाया — **तज्री बि-अ'युनिना** — **वो

हमारी आँखों के सामने चल रही थी।**'

उस लफ़्ज़ के साथ बैठिए, बेटा: **'हमारी आँखों के सामने।'** दुनिया की सबसे बड़ी तबाही, हर तरफ़ पानी, कोई किनारा नज़र नहीं — और उस लकड़ी के डिब्बे में बैठे मुट्ठी भर लोगों के लिए अल्लाह फ़रमाते हैं: **मैं देख रहा हूँ।** आपकी कश्ती चाहे कितनी छोटी हो और तूफ़ान कितना बड़ा — अगर वो उसकी आँखों के सामने चल रही है, तो वो डूबेगी नहीं।

फिर **'आद**: 'हमने उन पर एक **लगातार मनहूस दिन** में चीख़ती हवा भेजी — लोगों को यूँ उखाड़ती हुई जैसे वो उखड़े हुए **खजूर के तनों** के ठूँठ हों।'

फिर **समूद**: उन्हें ऊँटनी दी गई और पानी की बारी तय की गई — और उन्होंने अपने साथी को पुकारा, और उसने कूँचें काट दीं। 'तो हमने उन पर **एक ही चीख़** भेजी — और वो उस भूसे की तरह हो गए जिसे बाड़ बनाने वाला रौंद देता है।'

और फिर **लूत (अलैहि0)** की क़ौम: 'हमने उन पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेजी, सिवाए आल-ए-लूत के — हमने उन्हें सहर के वक़्त बचा लिया।' और एक तंबीह जो हिला देती है: 'और उन्होंने उसे मेहमानों के बारे में **फुसलाना** चाहा, तो हमने उनकी आँखें मिटा दीं।'

और हर एक के बाद: **फ़-हल मिम्-मुद्दकिर।**

बेटा, इन चारों को एक साथ रखिए और नक़्शा देखिए: **पानी, हवा, आवाज़, पत्थर।** एक ही ख़ालिक़, चार मुख़्तलिफ़ औज़ार — और हर बार एक बचाया गया गिरोह। **अल्लाह के पास ज़रियों की कभी कमी नहीं, और उनके पास बचाने का इंतिज़ाम हमेशा मौजूद होता है।**

और तुम्हारे मुनकिर कौन से बेहतर हैं?

फिर सूरह फ़िरऔन का ज़िक्र करती है — मुख़्तसर, तक़रीबन गुज़रते हुए: 'और फ़िरऔन वालों के पास तंबीहें आईं। उन्होंने हमारी सारी निशानियाँ झुठलाईं, तो हमने उन्हें एक **ग़ालिब, मुक़्तदिर** की पकड़ से पकड़ लिया।'

और फिर, बेटा, अल्लाह सीधे मक्का के सरदारों की तरफ़ रुख़ करते हैं, एक ऐसे सवाल के साथ जिसका कोई जवाब नहीं: '**अ कुफ़्फ़ारुकुम ख़ैरुम्-मिन उलाइकुम** — क्या **तुम्हारे** मुनकिर उन से **बेहतर** हैं? या तुम्हारे लिए किताबों में कोई **छूट** लिखी हुई है?'

यानी: अगर वो — जो तुमसे ताक़तवर थे, जिनके शहर तुमसे बड़े थे, जिनकी फ़ौजें तुमसे भारी थीं — बच न सके, **तो तुम किस बुनियाद पर सोचते हो कि तुम बच जाओगे?**

'या वो कहते हैं: हम एक जमाअत हैं जो एक दूसरे की मदद करेगी? **स-युह्ज़मुल्-जम्'उ व युवल्लूनद्-दुबुर** — **अनक़रीब ये जमाअत शिकस्त खाएगी और पीठ फेर कर भागेगी।**'

बेटा, ये आयत मक्का में उतरी, जब मुसलमान मुट्ठी भर और कमज़ोर थे। उमर (रज़ि0) फ़रमाते हैं: **जब ये उतरी तो मैं सोचता था — कौन सी जमाअत शिकस्त खाएगी?** और फिर **बद्र** का दिन आया, और मैंने अपनी आँखों से देखा कि नबी ﷺ ज़िरह पहने ये आयत पढ़ रहे थे: 'स-युह्ज़मुल-जम्'उ व युवल्लूनद्-दुबुर' — और उन्हें भागते देखा।

'**बलिस्-सा'अतु मौ'इदुहुम वस्-सा'अतु अद्हा व अमर्र** — बल्कि **क़ियामत** उनका मुक़र्रर वक़्त है — और क़ियामत **ज़्यादा भयानक और ज़्यादा कड़वी** है।' दुनिया की शिकस्त सिर्फ़ पहली क़िस्त है, बेटा।

हर चीज़ एक अंदाज़े से

और अब सूरह के आख़िरी हिस्से में, वो आयत आती है जिसे उलमा ने **तक़दीर के अक़ीदे की बुनियादी आयत** कहा है: '**इन्ना कुल्ल शै-इन ख़लक़्नाहु बि-क़दर** — बेशक हमने **हर चीज़ एक अंदाज़े से** बनाई है।'

बेटा, 'क़दर' का मतलब है नाप, अंदाज़ा, ठीक पैमाना। **कोई चीज़ इत्तिफ़ाक़ से नहीं है।** न वो बीमारी, न वो देर, न वो मुलाक़ात जो आपकी ज़िंदगी बदल गई, न वो

दरवाज़ा जो ठीक वक़्त पर बंद हुआ। **हर चीज़ नापी हुई है** — और नापने वाला हकीम है।

और नबी ﷺ ने फ़रमाया कि क़दरिया — तक़दीर के मुनकिरीन — इस उम्मत के मजूस हैं। और जब मुशरिकीन तक़दीर के बारे में बहस करते हुए आए, तो यही आयत नाज़िल हुई।

और फ़ौरन उसके साथ अल्लाह अपनी क़ुदरत दिखाते हैं: '**व मा अम्रुना इल्ला वाहिदतुन क-लम्हिम्-बिल्-बसर** — और हमारा हुक्म तो बस **एक** बात है, **आँख के झपकने** की तरह।' कोई अमला नहीं, कोई मरहले नहीं, कोई देर नहीं। **'कुन' — और वो हो जाता है।**

बेटा, इन दो आयतों को साथ थामिए और देखिए वो आपके दिल के साथ क्या करती हैं: **हर चीज़ नापी हुई है (तो घबराइए मत), और उसका हुक्म एक पलक झपकने में चलता है (तो मायूस मत होइए)।** आपका मसला उसके लिए एक आँख झपकने से ज़्यादा नहीं।

'और हमने तुम जैसे लोगों को हलाक किया — तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला? **व कुल्लु शै-इन फ़-'अलूहु फ़िज़्-ज़ुबुर** — और जो कुछ उन्होंने किया वो **किताबों में** दर्ज है — **व कुल्लु सग़ीरिंव्-व कबीरिम्-मुस्ततर** — और हर छोटी और बड़ी चीज़ **लिखी हुई** है।'

हर छोटी और बड़ी, बेटा। वो जिसे आप 'छोटी सी बात' कह कर गुज़र जाते हैं — दर्ज है। और वो जिसे आप 'किसी को पता नहीं चला' समझते हैं — लिखा हुआ है।

सचाई की नशिस्त

और फिर, बेटा, इन सारी तबाहियों और तंबीहों के बाद — पानी, हवा, चीख़, पत्थर, बद्र, क़ियामत, लिखे हुए दफ़्तर — सूरह अचानक बिल्कुल नरम हो जाती है, और सिर्फ़ दो आयतों में ख़त्म होती है जो किसी बाग़ की तरह खुलती हैं:

'**इन्नल्-मुत्तक़ीन फ़ी जन्नातिंव्-व नहर** — बेशक परहेज़गार **बाग़ों और

नहरों** में होंगे — **फ़ी मक़'अदि सिदि्क़न 'इंद मलीकिम्-मुक़्तदिर** — **सचाई की नशिस्त** में, एक **बादशाह-ए-मुक़्तदिर** के पास।'

बेटा, इन आख़िरी अल्फ़ाज़ को आहिस्ता चखिए। '**मक़'अदि सिद्क़**' — सचाई की नशिस्त: एक ऐसी मजलिस जहाँ कोई झूट नहीं, कोई दिखावा नहीं, कोई फ़ुज़ूल बात नहीं — **हर बात सची, हर वादा पूरा, हर दिल साफ़।** सोचिए इस दुनिया की कितनी थकन सिर्फ़ इसलिए है कि हमें झूट के दरमियान जीना पड़ता है।

और फिर: **"इंद मलीकिम्-मुक़्तदिर**' — एक **बादशाह** के पास, जो पूरी क़ुदरत वाला है। ग़ौर कीजिए, बेटा: उन्होंने ये नहीं कहा 'बाग़ों में' और बात ख़त्म। उन्होंने कहा **"इंद"** — उसके **पास**, उसकी **क़ुर्बत** में। **जन्नत की असल नेमत जगह नहीं, बल्कि पड़ोस है।**

और आख़िरी नाम देखिए जिस पर सूरह बंद होती है: **मलीकुम-मुक़्तदिर।** वही ताक़त जिसने चाँद फाड़ा, वही जिसने 'आद को उड़ाया और समूद को चीख़ से ख़त्म किया — **वही ताक़त आपकी मेज़बान होगी।** और इसीलिए, बेटा, मोमिन का दिल दो पंखों पर उड़ता है: उस ताक़त से डर, और उसी ताक़त की मेहमान-नवाज़ी की उम्मीद।

तो ये सूरह, जो एक **फटे चाँद** से शुरू हुई थी, एक **सची नशिस्त** पर ख़त्म होती है। और इन दोनों के दरमियान वो सवाल चार बार गूँजता है जो हमारा है: **फ़-हल मिम्-मुद्दकिर — है कोई जो नसीहत हासिल करे?**

इस सूरह से क्या सीखा

1. निशानी दलील को नहीं बदलती अगर दिल पहले फ़ैसला कर चुका हो — इनकार अक्सर ख़्वाहिश से आता है, और दलील बाद में गढ़ी जाती है।

2. 'हर मामला ठहर जाएगा' — हर अन-सुलझा हिसाब आख़िर-कार अपनी जगह पहुँचेगा।

3. क़ुरआन आसान बनाया गया — रास्ता खोल दिया गया; अब सिर्फ़ एक चीज़ की

कमी है: कोई जो आए।

4. आपकी कश्ती चाहे कितनी छोटी हो — अगर वो 'उसकी आँखों के सामने' चल रही है तो डूबेगी नहीं।

5. अल्लाह के पास औज़ारों की कमी नहीं (पानी, हवा, आवाज़, पत्थर) — और बचाने का इंतिज़ाम हमेशा साथ होता है।

6. 'हर चीज़ एक अंदाज़े से' — तो घबराइए मत; 'हमारा हुक्म एक आँख झपकने की तरह' — तो मायूस मत होइए।

7. हर छोटी और बड़ी चीज़ लिखी हुई है — और मंज़िल सिर्फ़ बाग़ नहीं, उस बादशाह की **क़ुर्बत** है।

या मलीकु या मुक़्तदिर, हमें उन में शामिल फ़रमाइए जो नसीहत हासिल करते हैं, और हमें सचाई की नशिस्त में अपनी क़ुर्बत अता कीजिए। आमीन।